Self Respect

12-09-2014

❖यह है बाप और बच्चों का मेला । गुरू और चेले अथवा शिष्यों का मेला नहीं है ।

❖उन गुरूओं की दिल में बच्चे का लॅव नहीं होगा । बाप के पास तो बच्चों का बहुत लॅव रहता है और बच्चों का भी बाप पर लॅव रहता है । तुम जानते हो बाबा तो हमको सृष्टि चक्र का ज्ञान सुनाते हैं ।

❖तुम्हारे पास मनुष्य जब आते हैं तो पूछते हैं यहाँ क्या सिखाया जाता है? बोलो, हम राजयोग सिखाते हैं, जिससे तुम मनुष्य से देवता अर्थात् राजा बन सकते हो और कोई सतसंग ऐसा नहीं होगा जो कहे हम मनुष्य से देवता बनने की शिक्षा देते हैं ।

❖ अब हम तुमको सारे सृष्टि चक्र का राज समझाते हैं, जिससे तुम चक्रवर्ती राजा बन जाएंगे और फिर तुमको पावन बनने की बहुत अच्छी युक्ति बताते हैं ।

❖ तो सतयुग आदि, कलियुग अन्त का यह है संगमयुग । इनको लीप युग कहा जाता है । इसमें हम जम्प मारते हैं । कहाँ? पुरानी दुनिया से नई दुनिया में जम्प मारते हैं । वह तो सीढ़ी से आहिस्ते-आहिस्ते नीचे उतरते आये । यहाँ तो हम छी-छी दुनिया से नई दुनिया में एकदम जम्प मारते हैं । सीधा चले जाते हैं ऊपर । पुरानी दुनिया को छोड़ हम नई दुनिया में जाते हैं । यह है बेहद की बात ।

❖ भारत में जब सतयुग था तो एक ही धर्म था, वही धर्म फिर अधर्म बनता है । अब तुम फिर से आदि सनातन देवी-देवता धर्म स्थापन कर रहे हो । जो जितना पुरूषार्थ करेंगे उतना उंच पद पाएंगे ।

❖अभी तुम समझते हो भक्ति से फायदा कुछ भी नहीं मिलना है । यह तो है ज्ञान, जिससे बहुत फायदा होता है । अभी तुम्हारी है चढ़ती कला ।

❖हम सब आत्मायें ऊपर में थी । फिर यहाँ आई है पार्ट बजाने ।

❖इस पाठशाला में मनुष्य से देवता बन जाना है । यह है नई दुनिया के लिए नॉलेज । वह बाप ही देंगे ना । तो बाप की दृष्टि रहती है बच्चों पर । हम आत्माओं को पढ़ाते हैं । तुम भी समझाते हो बेहद का बाप हमको समझाते हैं, उनका नाम है शिवबाबा ।

❖मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमोर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।

❖वरदान: बाप की आज्ञा समझ मोहब्बत से हर बात को सहन करने वाले सहनशील भव !